Peer reviewed Journal Impact Factor:5.13 ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

Multidisciplinary International Level Referred Journal

February-2021. Special Issue-11, Volume-4

Physical and Human Dimensions of Environment, Climate Change, and Sustainable Development

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Guest Editor
Dr. Birajdar Govind Dattopant
Principal
Sharadchandra Mahavidyalaya, Shiradhon Tq. Kallam Dist: Osmanabad (Maharashtra)

Executive Editors
Dr. A. I. Shaikh
Dr. M. B. Shirmale

Co- Editors

Dr. S. A. Chaus	**Dr. Shakeeluddin Khazi**	**Mr. P. U. Gambhire**

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot,No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

26	Geographical Analysis of Accessibility of Primary Health Centers In Beed District **Capt. Dr. M. G. Rajpange, Shaikh Abdul Samad Tamijoddin**	83-85
27	Analysis of Soil Charecteristic of Rahuri Tahsil In Ahmednagar District (Maharashtra) **Dr. D. M. Nalage, Dr. S. N. Shingote**	86-90
28	Work from Home for SHGs: Badarwas Jacket Cluster Concept **Jayant Singh**	91-92
29	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे पाणी प्रकल्पातील योगदान **प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे**	93-95
30	शाश्वत शेती विकास – काळाची गरज **प्रा. डॉ. अनंत नरवडे**	96-98
31	हिंदी काव्य में प्रकृति चेतना **प्रा. हिरा तुकाराम पोटकुले**	99-101
32	जागतिक हवामान बदल आणि भारताची भूमिका **Dr. Jagdish Deshmukh**	102-105
33	ई – ग्रंथालय : शैक्षणिक ग्रंथालयाचा अविभाज्य घटक **प्रा. सरडे दिलीप निवृत्ती**	106-107
34	भारतीय संविधानातील धर्मनिपेक्षतेचे तत्व आणि वास्तव **कु. नीता दत्तू घडलिंग**	108-109
35	पाणी व्यवस्थापनातील आधुनिक तंत्रज्ञान एक भौगोलिक अभ्यास **प्रा. डॉ. कलंदर मुस्तफा पठाण**	110-112
36	'गोटुल' गोंड जमातीचे शैक्षणिक केंद्र व त्याची समाज विकासातील भुमिका **डॉ. श्याम खंडारे, श्री. प्रफुल एस.सिडाम**	113-114
37	लेखिका सुनीता देशपांडे यांच्या ललित निबंध लेखनाचा आशय अभिव्यक्तिच्या दृष्टीने अभ्यास **नयन काशिनाथ राणे**	115-116
38	स्त्रीवादी साहित्याचे मुल्यनिकष **प्रा. जाधवर शशिकांत श्रीरंग**	117-122
39	परभणी जिल्ह्यातील ग्रामीण व नागरी दारिद्र्याचा तुलनात्मक अभ्यास **प्राचार्य डॉ. एम. जी. राजपंगे, गायकवाड बालाजी कोंडीबा**	123-126
40	भारतातील दारिद्र्य निर्मुलन कार्यक्रम : एक अभ्यास **डॉ.बालासाहेब शिवाजी पवार**	127-129
41	शालेय शिक्षणात ग्रंथालयाचे महत्व **प्रा. डॉ. गव्हाणे एम. पी.**	130-132
42	बार्शी तालुक्यातील ग्रामीण भागातील प्राथमिक स्तरावरील स्त्री शिक्षिकांना व्यावसायिक जबाबदारी पार पाडत असताना येणाऱ्या समस्यांचा अभ्यास **प्राचार्य डॉ. शशिकांत लक्ष्मण तांबे**	133-135
43	राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में भौगोलिक परिदृष्य **प्रा. केंद्रे डी. बी.**	136-138
44	शाश्वत शेतीच्या माध्यमातुन विकास **डॉ. सुनीता शिंदे, अमित भिमराव लोखंडे**	139-140
45	शाश्वत विकास **प्रा. डॉ.वसंत पांडुरंग सरवदे**	141-142
46	महाराष्ट्राच्या शाश्वत विकासामध्ये व्यापारी पिकांची भूमिका **पवार प्रियंका जयराम**	143-147
47	अतनूर या गावातील कुटूंब नियोजनाचा :- भोगौलिक अभ्यास **श्री.बिचकुंदे शशिकांत संग्राम**	148-151
48	मानवाच्या विकासात ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्राची भूमिका **श्री बिडवे मारुती शिवाजीराव**	152-155
49	हवामानबदलाचा शेती क्षेत्रावर झालेला परिणाम एक भौगोलिक विश्लेषण **प्रा. मनिषा कळसकर**	156-159
50	जालना जिल्ह्यातील रस्ता घनतेचा भौगोलिक अभ्यास **प्रा. डॉ. केंद्रे डी. एस.**	160-162

हिंदी काव्य में प्रकृति चेतना

प्रा. हिरा तुकाराम पोटकुले

कला एवं विज्ञान महाविद्यालय शिवाजी नगर गढ़ी, ता.गेवराई जि. बीड

सार:-

प्रकृति और मानव का संबंध उतना ही पुराना है जितना कि सृष्टि के उद्भव और विकास का इतिहास। मानव और प्रकृति के अटूट संबंध की अभिव्यक्ति धर्म, दर्शन, साहित्य और कला में चिरकल से होती आ रही है। साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य मानव जीवन का प्रतिबिंब है इसीलिए उस प्रतिबिंब में मानव जीवन की सहचरी प्रकृति का प्रतिबिंबित होना स्वाभाविक है। साहित्य में विशेषता काव्य में प्रकृति का मनमोहक चित्रण हुआ है।हिंदी काव्य में प्रकृति का वर्णन कई प्रकार से किया गया है जैसे- प्रतीक, अलंकार, उपदेश,बिंब- प्रतिबिंब, मानवीकरण, रहस्य, मानव- भावनाओं का चित्रण साथ ही साथ मानव द्वारा प्रकृति पर हो रहे प्रहार का चित्रण भी हिंदी कविता में हुआ है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल के कविता मे प्रकृती का मनोहारी चित्रण के साथ -साथ मनुष्य की प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी को भी प्रस्तुत किया है।ईश्वर ने प्रकृति में सुंदरता के अनमोल रतन संजोये है जिसकी सुंदरता को देखते हमारी आंखें कभी नहीं थक सकती।लेकिन हम भूल जाते हैं कि मानव जाति और प्रकृति के बीच के रिश्ते को लेकर हमारी भी कुछ जिम्मेदारीया है। लेकिन आज हम इस भाग- दौड़ भरी जिंदगी में पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते कुदरत की खूबसूरती का आनंद लेना भूल चुके हैं हम और साथ ही साथ प्रकृति पर हो रहे प्रहार को भी हम नहीं देख रहे। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के कवियों ने अपने कविताओं के माध्यम से प्रकृति के मनोहरी चित्रण के साथ-साथ प्रकृति के प्रति मनुष्य की जिम्मेदारीओं को भी अपने कविताओं में प्रस्तुत किया है। मनुष्य अपने ही मस्ती में धुंद, आधुनिक तकनीकी के पीछे दौड़ रहा है परिणाम स्वरूप पर्यावरण की हानि हो रही है। प्रकृति का संतुलन बनाए रखना मानव जाति की जिम्मेदारी है। मनुष्य को अगर हमेशा खुश और स्वस्थ रहना है तो स्वार्थी और गलत कार्यों को रोकने के साथ-साथ अपने ग्रह को बचाना होगा और इस सुंदर प्रकृति को अपने लिए बेहतर करना अब अनिवार्य बन चुका है।

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारतीय साहित्य में प्रकृति चित्रण की विशेष परंपरा रही है। प्रकृति और मानव का संबंध उतना ही पुराना है जितना कि सृष्टि के उद्भव और विकास का इतिहास। प्रकृति की गोद में ही प्रथम मानव शिशु ने आंखें खोली थी उसी की गोद में खेल कर बड़ा हुआ है । इसीलिए मानव और प्रकृति के अटूट संबंध की अभिव्यक्ति धर्म, दर्शन, साहित्य और कला में चिरकल से होती आ रही है। साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य मानव जीवन का प्रतिबिंब है इसीलिए उस प्रतिबिंब में मानव जीवन की सहचरी प्रकृति का प्रतिबिंबित होना स्वाभाविक है। साहित्य में विशेषता काव्य में प्रकृति का मनमोहक चित्रण हुआ है।हिंदी काव्य में प्रकृति का वर्णन कई प्रकार से किया गया है जैसे- प्रतीक, अलंकार, उपदेश,बिंब- प्रतिबिंब, मानवीकरण, रहस्य, मानव- भावनाओं का चित्रण साथ ही साथ मानव द्वारा प्रकृति पर हो रहे प्रहार का चित्रण भी हिंदी कविता में हुआ है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल के कविता मे प्रकृती का मनोहारी चित्रण के साथ -साथ मनुष्य की प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी को भी प्रस्तुत किया है। ईश्वर ने प्रकृति में सुंदरता के अनमोल रतन संजोये है जिसकी सुंदरता को देखते हमारी आंखें कभी नहीं थक सकती।लेकिन हम भूल जाते हैं कि मानव जाति और प्रकृति के बीच के रिश्ते को लेकर हमारी भी कुछ जिम्मेदारीया है।कुदरत का करिश्मा देखो की सूर्योदय की सुबह के साथ ये कितना सुंदर दृश्य दिखाई देता है जब चिड़ियों का गान, नदी, झरनों की आवाज, बहती ठंडी हवा और एक लंबे दिन के बाद बगीचे में शाम के समय दोस्तों के साथ खुशनुमा पल मनुष्य को कितना आनंद देता है। लेकिन आज हम इस भाग- दौड़ भरी जिंदगी में पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते कुदरत की खूबसूरती का आनंद लेना भूल चुके हैं हम और साथ ही साथ प्रकृति पर हो रहे प्रहार को भी हम नहीं देख रहे।भारतीय काव्य साहित्य में प्राचीन साहित्य ऋगवेद में ही हमें प्रकृति चित्रण की सुदृढ़ परंपरा प्राप्त होती है। हिंदी के प्रारंभिक काव्य में प्रकृति का चित्रण प्राय उद्दीपन और उपमान रूप में हुआ है । रासो ग्रंथों के रचयिताओं ने जहां सौंदर्य निरूपण के लिए प्रकृति के उपमान ग्रहण किए हैं वहां संयोग- वियोग की अनुभूतियों के उद्दीपन के रूप में विभिन्न रूपों का वर्णन किया है। 'बीसलदेव रासो' की नायिका की विरहअग्नि भादों मास की वर्षा की झाड़ियों से और उदिप्त होती है। मैथिल कोकिल ' ने तो प्रकृति के सौंदर्य को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। भक्तिकाल में सूरदास, तुलसीदास, मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी अमर कृतिओं में प्रकृति का वर्णन किया है। संत कबीरदास और संत मलूकदास ने मनुष्य को प्रकृति के प्रति जागृत रहने का संदेश दिया है । वर्तमान समय में समस्त विश्व के सामने ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न हुई है। पर्यावरण खतरे में है। पेड़ों की कटाई के कारण पर्यावरण पर बुरा असर हुआ है उस संदर्भ में कबीर ने प्रकृति, वनस्पति और प्राणी मात्र की ओर संवेदनशील भाव से देखा है।६०० वर्षों से भी अधिक समयपहले कबीर जी के वाणी में अनेक प्रसंग, दृष्टांत, उल्लेख मिलते हैं जहां जीव दया से भी आगे बढ़कर जड़- चेतन के साथ अपने को जोड़कर देखने के दृष्टि मिलती है। कबीर ने फूल, पत्तों, फल आदि को ईश्वर का रूप माना है-

"पाती ब्रह्मं पुष्पे विष्णु, फूल फल महादेवा । तीनि देवी एक मूर्ति करै किसकी सेवा।। १"

इस दोहे मे कबीर जी ने पर्यावरण विथ आत्मवत दृष्टिकोन स्पष्ट किया है । उन्होंने पत्तियों को ब्रह्मा, पुष्पो को विष्णु तथा फल- फूलों को महादेव का स्वरूप माना है। संत कबीर मनुष्य को यही सूचित करते हैं कि, फूल, फल और पत्तों को तोड़कर भगवान की मूर्ति पर चढ़ाना पाप है। फूल फूल पत्तों में व्याप्त भगवान के रूप को मानना चाहिए। इतनी गहरी सूक्ष्मा और व्यापक संवेदनशीलता कबीर की वाणी में है। कबीर दास की वाणी में दो चिंता के विषय है- मनुष्य का मानसिक -आत्मिक आयाम याने भीतर का पर्यावरण और सांसारिक -भौतिक आयाम याने बाहरी पर्यावरण। संत कबीर ने 600 वर्षों पूर्व पेड़, पौधों में प्राण तत्व के होने के, मानव की तरह सांस लेने के, सुख-दुख तथा पीड़ा मनने की अवधारणा को व्यक्त करके उन्हें कष्ट ना पहुंचाने की, नष्ट न करने की बात कही है। कबीर इस दोहे के माध्यम से मनुष्य को आगाह करना चाहते हैं-

"बकरी पाती खात है वाकि काढी खाल । जो नर बकरी खात हैं, तिनको कौन हवाल।।"२

कबीर जी मनुष्य को दृष्टांत समजाते है की बकरी पशु होने के कारण स्वाभाविक रूप से हरे -भरे पत्तियों को खाती है तो इसकी बदौलत उसे अपनी खाल नुचवानी पड़ती है। मनुष्य सोच, समझ, विवेक के रहते हुए बकरी को मारकर खाते हैं, पेड़-पौधों को काटते हैं तो उसकी दशा कैसी हो सकती है। मनुष्य ने प्रकृति के साथ जिस प्रकार का व्यवहार किया अब प्रकृति भी मनुष्य के साथ वही व्यवहार कर रही है। इसी कारण मानव जाति को आज अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

संत मलूकदास अपने काव्य में प्रकृति के प्रति आत्मिक संबंध बताते हैं। कहते हैं कि पेड़, पौधे, वनस्पति में चैतन्य व्याप्त है और उन में मनुष्य की भांति प्राणतत्व विद्यमान है इसीलिए पेड़ -पौधों की हरी टहनी नहीं तोड़ें। उसके टूटने से ऐसा लगता है जैसे देह में छुरा या बान घुस गया हो। ऐसे ही पीड़ा पेड़ -पौधों को होती है।

"हरी डार न तोड़िये, लागे छूरा बान, दास मलूका यों कहै, अपना- सा जिव जान।।"३

आज जिस पर्यावरण रक्षा और जीव रक्षा के लिए विश्व के सभी देशों में अनेक संस्थाएं आंदोलन कर रही है और राष्ट्रसंघ और समस्त विश्व में हर वर्ष पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यही बात संतो ने 600 वर्षों पूर्व ही बताई है।भूमंडलीकरण के इस दौर में वनस्पतियों, हरे-भरे वृक्षों के विनाश को रोकने के लिए मात्र भौतिक उपयोगितावादी दृष्टिकोण से नहीं बल्कि आत्मभाव से वृक्ष की ओर देखना चाहिए। वृक्षों को भी अपने जैसा जीवनधारी प्राणी मानकर उसकी पीड़ा को भी मनुष्य जैसे पीड़ा मानने का आग्रह संत मलूकदास जैसे संत कर रहे हैं। संत समूचे ब्रह्मांड के रक्षण की चिंताओं को मध्ययुग से ही साकार कर रहे हैं। पाश्चात्य और भौतिकवाद की दृष्टि वनस्पतियों, पेड़- पौधों को भी भोग- उपभोग की दृष्टि से देखती है इस कारण धरती पर के जीवन को खतरा पैदा हो गया है। आधुनिक विज्ञान हिंदी काव्य में प्रकृति की छटा का चित्रण पर्याप्त सूक्ष्मता , सरसता से हुआ है। कभी-कभी छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला', सुमित्रानंदन पंत , महादेवी वर्मा जैसे कवियों ने प्रकृति को आलंबन बनाकर उसके नाना रूपों का चित्रण किया है। छायावादी कवियों ने अपने कविता में विज्ञान के दुष्परिणाम को भी अभिव्यक्त किया है। छायावादी कवि जगत के अनु -अनु एवं कण-कण में एक अलौकिक सौंदर्य की छटा देखता है और उस सौंदर्य पर मुग्ध होकर अपनी रचनाओं में उसके सूक्ष्म अतिंद्रीय को अभिव्यक्त करता है।

"कुसुम कानन अंचल में मंद पवन प्रेरित सौरभ साकार,
रचित परमाणु पराग शरीर खड़ा हो ले मधु का आधार।
और पडती हो उस पर शुभ्र नवल मधु राका मन की साध,
हंसी का मद विव्हल भरल प्रतिबिंब मधुरिमा सदृश्य असीम अबाध।"४

आधुनिक तंत्रज्ञान के इस युग में हम अपने आप में अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों में ऐसे फंसे हैं कि प्रकृति की खूबसूरती का आनंद लेना भी भूल चुके हैं और जाने अनजाने में हम सब प्रकृति पर पर्यावरण पर प्रहार कर रहे हैं जो प्रकृति हमें आनंद देती है हमारा स्वस्थ्य बनाए रखती हैं उस पर ही हम नए टेक्नोलॉजी से प्रहार कर रहे हैं। हमारे आसपास के सौंदर्य को हम मिटा रहे हैं। कवि धर्मेंद्रकुमार निवातिया 'संभल जाओ ऐ दुनिया वालों' कविता में कहते हैं-

"लुप्त हुए अब झील और झरने वन्यजीवों को मिला मुकाम नहीं!
मिटा रहा खुद जीवन के अवय धरा पर बचा जीव का आधार नहीं!!
नाश्ता किए हमने हरे-भरे वृक्ष, लताये देखें कहीं हरियाली का अब नाम नहीं
लहलाते थे कभी वृक्ष हर आंगन में, बचा शेष उन गलियारों का श्रंगार नहीं!!"५

कई बार हम छुट्टियों में अपना सारा दिन टीवी, न्यूजपेपर, कंप्यूटर खेलों में खराब कर देते हैं लेकिन हम भूल जाते हैं कि दरवाजे के बाहर प्रकृति की गोद में भी बहुत कुछ रोचक है हमारे लिए। बिना जरूरत के हम घर के सारे लाइटों को जलाकर रखते हैं। हम बेमतलब बिजली का इस्तेमाल करते हैं जो ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ावा देता है। हमारी दूसरी गतिविधियां जैसे पेड़ों

और जंगलों की कटाई से सी ओ 2 गैस की मात्रा में वृद्धि होती है और ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनते हैं। मनुष्य की गलतियों के कारण आज हमें प्राकृतिक आपदाओं से अकाल, बाढ़, आग को सहना पड़ रहा है। हम प्रकृति को नुकसान पहुंचाते हैं तो वही प्रकृति हमें वापस लौटा देती है। धर्मेंद्र कुमार की कविता कहर में यह चित्रण दिखाई देता है-

"रहे रहकर टूटता रब का कहर खंडहरों में तब्दील होते शहर
सिहर उठता है वदन देख आतंक की लहर
आघात से पहले उबरे नहीं तभी प्रहार ठहर ठहर
कैसी उसकी लीला है ये कैसा उमड़ा प्रकृति का क्रोध
विनाश लीला कर क्यों झुंझला कर करें प्रकट रोष"६

आतः है स्पष्ट है कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के कवियों ने अपने कविताओं के माध्यम से प्रकृति के मनोहरी चित्रण के साथ-साथ प्रकृति के प्रति मनुष्य की जिम्मेदारीओं को भी अपने कविताओं में प्रस्तुत किया है। मनुष्य अपने ही मस्ती में धुंद, आधुनिक तकनीकी के पीछे दौड़ रहा है परिणाम स्वरूप पर्यावरण की हानि हो रही है। प्रकृति का संतुलन बनाए रखना मानव जाति की जिम्मेदारी है। मनुष्य को अगर हमेशा खुश और स्वस्थ रहना है तो स्वार्थी और गलत कार्यों को रोकने के साथ-साथ अपने ग्रह को बचाना होगा और इस सुंदर प्रकृति को अपने लिए बेहतर करना अब अनिवार्य बन चुका है। प्रकृति को संतुलित करने के लिए मनुष्य को पेड़ों और जंगलों की कटाई रोकनी होगी ऊर्जा और जल का संरक्षण करना होगा। प्रकृति के असली उपभोक्ता मनुष्य है तो मनुष्य को ही इसका ध्यान रखना चाहिए।

संदर्भ सूचीः-

१)सात भारतीय संत-डाॅ.बलदेव वंशी,पृ.१२
२)सात भारतीय संत-डाॅ.बलदेव वंशी,पृ.३४
३)सात भारतीय संत-डाॅ.बलदेव वंशी,पृ.१५४
४) कामायनी-जयशंकर प्रसाद,पृ.४८
५)संभल जाओ ऐ दुनिया वालो-धर्मेंद्रकुमार निवातिया, hindisahitya-org/49492], हिंदी साहित्य काव्य संकलन
६)कहर-धर्मेंद्रकुमार निवातिया,] hindisahitya-org/49492], हिंदी साहित्य काव्य संकलन